रात गये

[कुछ दोस्त अज़ीज़ के मकान पर जमा हैं और ब्रिज हो रहा है।]

अज़ीज़—चलिये हज़रत, पास किया।

जुगल—हज़रत अज़ीज़ फ़रमाते है पास किया और यह बन्दए-नाचीज़ अर्ज़ परदाज़ है अच्छा चलिये टू नो ट्रम्प्स।

रशीद—अज़ीज़ साहब ने पास किया, जुगल साहब फ़रमाते हैं टू नो ट्रम्प्स और मैं बोला नो बिड।

अज़ीज़—तुम बोलो प्रेम, यानी आप हैं कहाँ ?

प्रेम—भई, वह आ रहा है अयाज़। आज मैंने बिल्कुल तै कर लिया है, इसके पड़ौस वाले वह मिर्ज़ा साहब हैं ना उनसे कह दिया है बस यहीं से तमाशा देखा जायगा।

जुगल—उसको आज देर तक रोके रखो।

अज़ीज़—और मालूम न होने पाये उसे। यार उसने तो वाक़ई नाक में दम कर दिया है।

रशीद—शश, आइये भाई साहब, आप ही का जिक्रे-खैर था।

[क़दमों की चाप]

अयाज़—भई माफ़ करना, ज़रा देर हो गई।

जुगल—बजा इरशाद हुआ, सात बज रहे हैं। यह तो हुई ज़रा-सी देर और बहुत देर तो ग़ालिबन बारह बजे से पहले न होती होगी। यह आप आज रहे कहाँ ?

रशीद—भाभी को किसी पार्टी, किसी ऐट होम या ज़नाना क्लब ले गये होंगे।

अयाज़—नहीं, ज़नाना क्लब से तो उन्होंने कब का इस्तीफ़ा दे दिया। वही जो सदारत वग़ैरा का झगड़ा हुआ था।

रशीद—तो अब क्लब का क्या रहा होगा, वह भी टूट जायगा।

अयाज़—जी हाँ, क्लब की सेक्रेटरी साहबा ने लिखा था कि आप

तो खफ़ा होकर बैठ रहीं। अब कहिये तो बन्द कर दिया जाय क्लब। तो उन्होंने उसी ख़त पर बरजस्ता यह शेर लिख दिया—

बुलबुल ने आशियाना चमन से उठा लिया
उसकी बला से बूम बसे या हुमा रहे

जुगल—भई अच्छी चुटकी ली भाभी ने और खुद बुलबुल की बुलबुल रहीं।

अजीज—तो अब अयाज़ तुम रहोगे ना ? मैं तो हुमा बनकर रह नहीं सकता। जरा आजकल मसरूफ़ हूँ। [क़हक़हा]

अयाज़—जबसे क्लब से इस्तीफ़ा दिया है अखबारों के नुमाइंदे घर घेरे रहते हैं कि अपना बयान दीजिये, इस्तीफ़े की वजह बताइये, क्लब के हालात पर रोशनी डालिये। मगर वह अपना कोई बयान देने को तैयार नहीं हैं। और अच्छा ही है जी। इस क्लब-व्लब के झगड़े में उनकी तमाम इंशापरदाजी खाक़ में मिलकर रह गई थी। अब आजकल तस्नीफ़ो-तालीफ़ (लेखन कार्य) का काम बड़े ज़ोर में हो रहा है।

जुगल—भाई अयाज़, एक बात तो है कि इस ग़रीब की शादी तुमसे बहुत ग़लत हुई वर्ना तो वह न जाने किस बला की औरत होती।

अजीज—तुमको ऐसी बीवी का मियाँ कहलाना खुद भी मुनासिब मालूम होता है ? अपने दिल पर हाथ रखकर बताओ कि क्या तुम ईमानदारी के साथ उस बेचारी के शौहर बनने के क़ाबिल थे ?

अयाज़—मुझे तो खुद इक़रार है कि शादी के मामले में मेरी क़िस्मत वाक़ई क़ाबिले-रश्क है। मगर एक बात है कि मैं बावजूद इन तमाम बातों के आज तक दबकर नहीं रहा। यह नहीं कि हमारे रशीद भाई की तरह रात घर जाने में ज़रा देर हो गई तो बेद की तरह काँप रहे थे।

रशीद—मेरी न कहो, तुम्हारी क़सम इस जिन्दगी से आजिज़ हूँ। बीवी क्या मिली है अतालीक़ (शिक्षक) मिली है। क्यों देर में आये, ताश क्यों

खेले, सिनेमा क्यों गये ? हर वक़्त तालिबे-इल्मों की तरह निगरानी फ़रमाती हैं और जब देखिये बात-बात पर लड़ने को मौजूद ।

अयाज़—यह नतीजा है दर असल जहालत का । भई, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि अगर मुझको ऐसी बीवी मिल जाती या मैं भी तुम्हारी तरह बीवी से दबकर रहने लगता तो ज़िन्दगी से आजिज़ होने के बजाय कब का ख़ुदकुशी करके क़िस्सा पाक कर चुका होता । मगर ख़ुदा का शुक्र है मेरी ज़िन्दगी सही मानों में ज़िन्दगी है । मेरा घर जन्नत है, और यह सब कुछ दर-असल बीवी के दम से है ।

अज़ीज़—[आवाज़ देकर] अरे छोटू आईना लाओ ।

जुगल—या वहशत ! आईने का इस वक़्त क्या होगा ?

अज़ीज़—मेरा मतलब यह है कि इन हज़रत को वक़्तन-फ़वक़्तन आईना दिखा देना चाहिये ताकि यह अपनी हक़ीक़त से बेख़बर न होने पायें । और इनको यह मालूम होता रहे कि वह ग़रीब औरत किस क़दर क़ाबिले-रहम है, जो इनकी जौजियत (पत्नी) में आजाने के बाद भी ज़िन्दा रहे ।

अयाज़—यह कभी कहियेगा भी नहीं । मैं तुमसे सच कहता हूँ कि आज ही जब मैं दफ़्तर से आया हूँ तो आप ग़ुस्लख़ाने से बाल खोले प्याज़ी रंग की साड़ी लहराती हुई तशरीफ़ लाईं । और सहन में क़रीब कुर्सी पर बैठकर बोलीं, 'आप जामाज़ेब बहुत हैं ।'

जुगल—[क़हक़हा मारकर] यानी कितना ख़ूबसूरत मज़ाक़ किया है !

अज़ीज़—हम भी क़ायल हो गये ।

रशीद—भाई अयाज़, आप बकने दीजिये इन लोगों को । हाँ तो फिर क्या हुआ ?

अयाज़—ये लोग समझ रहे हैं मज़ाक़ । मैं तुमसे सच कहता हूँ । कि आज तक शादी के बाद से कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रा है कि उन्होंने सुबह उठकर मेरी सूरत न देखी हो ।

प्रेम—और रात को ख़्वाब में उछल-उछल न पड़ती हों। [सबका क़हक़हा]

रशीद—लाहौल वला-क़ूवत! किस क़दर बदमज़ाक हैं आप लोग भी। आप मुझसे कहिये भाई अयाज़।

अयाज़—रशीद भाई, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मैं कोई ख़ूबसूरत आदमी नहीं हूँ। मगर एक शरीफ औरत को अपने शौहर की बदसूरती में हुस्न नज़र आता है तो इस पर किसी को हँसने का क्या हक़।

जुगल—मगर भाई इसमें तो शराफ़त से ज्यादा तुम्हारी हिमाक़त को दख़ल है कि वह करती हैं तुमसे मज़ाक़ और तुम उसको सच समझे बैठे हो।

अज़ीज़—या तो फिर यह बात है कि भाभी को निहायत मोटे तालों के चश्मे की फ़ौरन ज़रूरत है।

रशीद—नहीं साहब, शरीफ औरत शौहर की परिस्तार होती है। क्यों अयाज़ भाई?

अयाज़—यक़ीन जानो कि जिसको फ़रेफ़्तगी कहते हैं ना वही उस औरत का हाल है मेरे साथ।

जुगल—तो उनके नज़दीक आप जामाज़ेब हैं?

अयाज़—यानी वह भी समझती है तो इसको आख़िर मैं क्या करूँ? आज ही कह रही थीं कि आप पर हिन्दुस्तानी और अंग्रेज़ी लिबास दोनों अच्छे लगते हैं।

अज़ीज़—अंग्रेज़ी लिबास में तो भई माफ़ करना तुम अच्छे-ख़ासे बहरूपिये मालूम होते हो।

प्रेम—और हिन्दुस्तानी लिबास जब पहनते हो तो ख़ूबी यह होती है कि कोई चीज़ अपनी नहीं मालूम होती।

जुगल—अब इसी वक़्त अपने लिबास की तरतीब देख लीजिये कि यह जो छोटे-से सरे-अक़दस पर आपने तुर्की टोपी पहन रखी है ना मालूम होता है कि केतली पर किसी ने टी-कोज़ी रख दी है।

प्रेम—और शेरवानी आपकी दुआ से ऐसी है कि अगर इत्तेफ़ाक़ से आपकी तन्दुरुस्ती ऐसी हो जाय कि आप अपने से दोगुने हो जायें तो भी फ़िट रहेगी।

रशीद—मतलब आप हज़रात का मुख्तसरन गोया यह हुआ कि भाई साहब जामाज़ेब तो नहीं अलबत्ता फ़बतीज़ेब ज़रूर हैं। मगर मैं इसे मानने के लिए तैयार नहीं हूँ। अच्छी-खासी आदमियों की-सी सूरत है।

अज़ीज़—बस यही ग़लत है। और इनके मुताल्लिक़ सबसे बड़ा बोहतान है।

अयाज़—अच्छा साहब, अब अगर मैं तख्तए-मश्क़ बन चुका हूँ तो इजाजत दीजिये। आप लोगों के पास तो जिसको बेवक़ूफ़ बनना हो वह बैठे।

जुगल—जाने दो भाई देर हो जायगी। कल ही बेचारे पर झाड़ पड़ चुकी है।

अयाज़—झाड़, क्या मानी झाड़ के ?

अज़ीज़—कल देर हो गई थी ना तो भाभी ने खबर ज़रूर ली होगी।

अयाज़—जी, मैं रशीद तो हूँ नहीं कि नौ बजे और उनको इख्तेलाज शुरू हुआ। देर हो गई थी तो क्या हुआ ? वह तो खुद कहती हैं कि किसी क्लब के मेम्बर बन जाओ। तफ़रीह करो! मियाँ, वह पढ़ी-लिखी समझदार औरत है, रोशन-ख़याल है। और ज़िन्दगी को बनाकर बसर करना जानती हैं।

रशीद—[ठण्डी साँस लेकर] हाँ भाई, ये भी मुक़द्दर की बातें हैं। एक हम हैं कि घर गये और टाँग ले ली गई।

अयाज़—कल रात को जब मैं पहुँचा हूँ तो मसहरी के सरहाने

लैंप रोशन था और 'दीवाने-ग़ालिब' का मुतालिया हो रहा था। मुझको देखते ही कहने लगीं—

सुबह करना शाम का लाना है जूए-शीर का

रशीद—भाई साहब, देखिये यह है फ़र्क़ एक जाहिल और पढ़ी-लिखी औरत का। एतराज उन्होंने भी किया मगर किस खूबसूरती के साथ। और मेरी घर वाली ने देखते ही कहा, 'क्यों आये अब भी, एक दम से सुबह ही को आ जाते ना ?'

अयाज़—अरे तौबा ! मुझ से तो अगर इस तरह कह दें तो जनाब माफ़ कीजियेगा मिज़ाज ठिकाने लगा दूँ। और सुनिये उन्होंने कहा था कि वापसी में 'दीवाने-ज़ौक़' की ज़रा ख़बर लें। भई मैं यहाँ की गड़बड़ और ख़िज कमबख्त की वजह से भूल गया। अब जो उन्होंने पूछा कि 'लाये दीवाने-ज़ौक़ ?' तो मैं मुस्करा कर चुप हो गया और कोई औरत होती तो फ़ौरन नाक-भौं चढ़ाकर बैठ रहती मगर नेकबख्त ने ज़ेरे-लब तबस्सुम के साथ यह शेर पढ़ दिया—

तिरे वादे पर जिये हम तो यह जान झूट जाना
कि ख़ुशी से मर न जाते अगर एतबार होता

रशीद—भई सुभानअल्लाह ! क्या बरजस्तगी है ! मालूम होता है कि इस मौक़े के लिए शेर कहा गया था।

जुगल—वह तमीज़दारी और सलीक़े की बात है।

अज़ीज़—भाभी का रुझाने-तब्अ (झुकाव) शाइरी की तरफ़ मालूम होता है।

अयाज़—शेर तो ख़ैर वह ख़ुद भी कहती हैं। अभी चार-पाँच रोज़ हुए उनकी ब्याज़ पर मैंने यह शेर देखा था—

रानाइए-ख़याल तसव्वुर है आपका

और भी ज़रा देखना किस रुख़ से मिसरा लगाया है—

शाइस्तए-ग़ुरूर बनाया है आपने

रशीद—इस शेर से तो कुहना-मश्क़ी और उस्तादी टपक रही है।'

अयाज—और नस्र में भी उनका रंग सबसे अलग है। आज ही वह अपनी किताब लिखते-लिखते जो गई तो मैंने जा-बजा उसको देखा, एक जगह लिखा था : 'तुम निगाहों के क़रीब तो हो सकते हो मगर रूह को तुम पर यक़ीन है। और दिल तुम पर ईमान ला चुका है। क्या यह भी मुहब्बत की कुफ़्र सामानी है?'

जुगल—और तो ख़ैर कुछ नहीं, अगर तुम इस जुमले का तर्जुमा कर दो अपनी ज़बान में तो दो पैकेट चाकलेट के अभी दिये।

अज़ीज़—चलो, दो पैकेट मेरी तरफ़ से भी।

अयाज़—भई तुम लोग तो हो मसख़रे और मैं लग जाता हूँ बातों में। आज मैं वादा कर चुका हूँ कि 'दीवाने-ज़ौक़' ज़रूर लेकर आऊँगा। लिहाज़ा मैं तो चला। [घड़ी देखकर] उफ़्फ़ोह साढ़े दस, अच्छा भई रुख़सत।

अज़ीज़—लो सिगरेट तो लो।

अयाज़—शुक्रिया! [सिगरेट जलाने में जल्दी से कश लेकर चला जाता है।]

अज़ीज़—इसका दिमाग़ वाक़ई चल गया है।

जुगल—और चला हुआ कब नहीं था? पहले रोज एक नई मुहब्बत के अफ़साने सुना-सुनाकर कान पका दिये थे। अब बीवीनामा सुना-सुनाकर नाक में दम कर दिया है।

रशीद—अच्छा देखो, वह गया सड़क-सड़क। हम लोग इधर से निकल जायें, शार्ट कट से। उससे पहले पहुँचना है ना।

प्रेम—तो चलो ना, वह तो दूर निकल गया। सीधा घर ही जा रहा है।

अज़ीज़—आओ चलो।

[सब उठकर जाते हैं। मिर्ज़ा साहब के मकान में सब ख़ामोशी के साथ जमा हो जाते हैं और सरगोशियों में बातें करते हैं।]

रशीद—यही है नीचे अयाज़ का मकान।

जुगल—अभी पहुँचा नहीं है शायद।

अज़ीज़—वह क्या आ रहा है लम्बे-लम्बे क़दम उठाता हुआ। वही है ना ?

प्रेम—हाँ, हाँ वही है, चुप रहो।

[अयाज़ दरवाज़े में हाथ डालकर कुण्डी खोलता है। कुण्डी की आवाज़ पर बीवी बुलंद आवाज़ से पूछती है।]

पत्नी—कौन है ?

अयाज़—मैं ही था।

पत्नी—अब आधी रात को भी आने की आख़िर ज़रूरत ही क्या थी ? घर जाता मुआँ चूल्हे में। बीवी के मुँह को झुलसा तुम अपनी रंगरेलियों में रहते।

अयाज़—ज़रा सरकार काम से गया हुआ था डिप्टी साहब के यहाँ।

पत्नी—रोज़ ही जाते हो तुम डिप्टी साहब के यहाँ। अब आये हैं वहाँ से मुझे चलाने। डिप्टी साहब के यहाँ गये थे। तुमसे छूट चुका यह सैलानीपन। मगर मुझ से भी आधी-आधी रात तक जागा नहीं जा सकता।

अयाज़—बस अब कल से नहीं जाना है। आज काम ख़त्म हो गया सब।

पत्नी—चलो हटो, रोज़ के तुम्हारे यही बहाने हैं। यहाँ डर के मारे मुआँ बुरा हाल है। सारा घर पड़ा हुआ साँय-साँय कर रहा है और मैं एक अकेली जान। तुमको ऐसे ही घूमना-फिरना है तो मुझे पहुँचा दो अपने घर। फिर घूमो खूब रात-रात भर।

अयाज़—अरे साहब, तो अब हो गया। तुम तो एक बात के पीछे पड़ जाती हो। कह दिया अब कल से नहीं जाऊँगा।

पत्नी—कल भी तो तुमने यही कहा था। आधी-आधी रात तक

जागूँ और दिन भर घर के कामों में मरूँ। आदमी न हुई मुई जिन हो गई। कोई घर को आकर मोस ले जाये तो मैं औरत जात क्या कर सकती हूँ ?

अयाज—तौबा है, अब माफ़ भी कर दो। कोई मैं सैर-सपाटे में तो था नहीं कि तुम इस तरह झिड़क रही हो।

पत्नी—ऐ मैं खूब जानती हूँ तुम्हारी इन बहाने बाज़ियों को। कभी डिप्टी साहब के यहाँ रह गये। कभी वह कौन हैं—मुए निस्पट्टर साहब, उन्होंने रोक लिया। बेचारे आधी-आधी रात तक बस इन्हीं कामों में रहते हैं।

अयाज—तो गोया मैं झूठ बोल रहा हूँ। कभी तो तुमने किसी बात का यक़ीन किया होता ? इसलिए तो कहता हूँ कि यह बदगुमानी तुम्हारी खता नहीं। तुम्हारी जहालत की ख़ता है।

पत्नी—तो किसने तुम्हारे हाथ जोड़े थे कि मुझ जाहिल को ले आओ अपने घर ? तुमको तो पहले से मालूम था कि मैं कोई मिडिल पास नहीं हूँ। फिर क्यों की थी शादी ?

अयाज—बजाय इसके कि शौहर दिन भर का थका-मारा घर आया था उठकर खाने-पीने की फ़िक्र करतीं, मुँह-हाथ धोने को पानी रखतीं तुमने यह लेक्चर देना शुरू कर दिया।

पत्नी—हाँ, शौहर साहब रात-रात भर रतजगा करायें और जब सहरी के वक़्त आयें तो इस तरह नाचती फिरूँ। मैं तुम्हारी फ़िक्र किया करूँगी। तुम अलबत्ता मेरी वजह से आधी-आधी रात तक ग़ायब रहते हो।

अयाज—ज्यादा-से-ज्यादा अब बजे होंगे ग्यारह। इसका नाम है आधी रात। मगर तुमको तो आदत पड़ गई है बकने की। क्या करो इस बकवास के मर्ज़ से मजबूर हो।

पत्नी—हाँ हाँ, मैं तो बकवास कर रही हूँ। अपने पैरों में बँधे

हुए सनीचर को नहीं देखते और बकवास है मुझको। दोस्तों में बैठे हुए वही मुए ताश-पत्ते हो रहे होंगे। वह क्या कहलाता है निगोड़ मारा इर्ज-ब्रिज।

अयाज़—फिर वही ? यक़ीन तो तुमको आ ही नहीं सकता चाहे मैं अपनी गर्दन काट कर रख दूँ। कौन मरदूद ताश खेल रहा था ? और किस कम्बख्त ने आज दोस्तों की सूरत भी देखी है। यह साहब हम दिर के थके-हारे घर में आये हैं।

पत्नी—ऐ मेरा क्या है ! न मानोगे तो आज नहीं कल खुद ही पछताओगे। मैं मुई आधी-आधी रात तक सरम-सुहमकर और जाग-जागकर अपनी जान पर तो खेल ही रही हूँ। मगर यह बताये देती हूँ कि तुम्हारे भी ये ढंग घर बनाने के नहीं हैं।

अयाज़—तमाम दुनिया में बीवी की क़ाबिलयत का ढिंढोरा पीटते-फिरते हैं। जिसको देखिये, वह मुझ नामुराद की क़िस्मत पर रश्क करता है। और मैं हूँ कि खुदा दुश्मन को भी ऐसा शौहर बनने से महफ़ूज़ रखे !

पत्नी—यह भी मुआ झूठ अगर दोस्तों से कहते हो तो झूठ और नहीं कहते हो तो मुझसे झूठ बोल रहे हो।

अयाज़—झूठा तो खैर मैं हूँ ही। मगर किसी तरह ज़िन्दा भी रहने दोगी मुझ कम्बख्त को। दोस्तों को कैसी-कैसी बीवियाँ मिली हैं। रशीद की बीवी को देखिये, पढ़ी-लिखी सुगढ़, नाक-नक़्शे से दुरुस्त और फिर सही मानों में शरीफ़ क़िस्म की बीवी।

पत्नी—और मुझमें सब ऐब हैं ! यह भी तुम जानते थे कि मैं पढ़ी-लिखी नहीं हूँ, खूबसूरत नहीं हूँ, फूहड़ हूँ। अलबत्ता शराफ़त को जो तुम कह रहे हो तो जो तुम्हारा खानदान वह मेरा।

अयाज़—हरेक यह जानता है कि अयाज़ की बीवी कितनी लायक़ और क़ाबिल औरत है।

पत्नी—क़ाबिल नहीं तो वह, बड़ी धूम थी कि साहब पढ़ाया करूँगा। किताब लाये, तख़्ती लाये और मालूम होता था कि बस अब आलिम-फ़ाज़िल ही तो कर देंगे यह मुझे। तख़्ती पड़ी हुई मुई भिनक रही है। और किताब भी जाने क्या हुई निगोड़ी मारी।

अयाज़—पढ़ाता क्या ख़ाक तुमको! दिमाग़ में भेजा हो तो पढ़ो भी मगर वहाँ तो भरी हुई है घास।

पत्नी—बस घास भरी हुई है कि तुम्हारे चलत्तरों में नहीं आई कि तुम आधी रात को आकर कह दिया करो कि मैं सरकारी काम से गया हुआ था और मैं यक़ीन कर लिया करूँ। चले हैं वहाँ से घास भरी हुई है।

अयाज़—अजी लानत भेजो तुम मुझ पर। मैं तो बहाने ही करता हूँ। यही सही, अब जो तुमसे हो सके वह कर लेना मेरा। जितना दबो बेचारी सर ही चढ़ी जाती हैं।

पत्नी—तो मैंने भी कह दिया है कि मैं अकेली इस घर में नहीं रह सकती। तुम्हें अगर ये सरकारी काम हैं, सैर-सपाटा है और अगर इतनी ही देर में आना है तो या तो मुझे मेरे घर पर रखो या अपने यहाँ से किसी को बुला कर यहाँ रखो। समझे कि नहीं?

अयाज़—अच्छा साहब, समझ गये। अब कुछ खाने को भी मिलेगा या यों ही पड़ रहूँ मुँह लपेट कर।

पत्नी—उठ तो रही हूँ। तुम जब तक मुँह-हाथ धोलो, या मैं ही हाथ-मुँह धुला दूँ? [दोनों के क़दमों की चाप]

[उधर सरगोशियों में सब दोस्त बातें करते हैं।]

जुगल—देखा तुमने?

अज़ीज़—मजा आ गया। कमाल है भई इस शख़्स का झूठ भी।

प्रेम—वह तमाशा दिखाया है रशीद तुमने कि याद रहेगा।

रशीद—तमाशा अभी कहाँ दिखाया है, तमाशा तो अब होगा ज़रा ठहरो।

जुगल—यानी अभी कुछ बाक़ी है और होने को ?

रशीद—असल तमाशा तो अब होगा। देखते रहो ज़रा। अब मैं जाकर इन हज़रत को आवाज़ देता हूँ और कहूँगा दिन भर डिप्टी साहब तुम्हारा इन्तेज़ार करते रहे मगर तुम न जाने कहाँ ग़ायब थे। कल से बराबर रास्ता देख रहे हैं, तमाम सरकारी काम रुके पड़े हैं।

जुगल—अरे भाई यह तो बहुत सख्त हमला होगा। वह मार डालेगी इन हज़रत को।

अज़ीज़—नहीं नहीं, ठीक है। झूठे को घर तक ज़रूर पहुँचाना चाहिये। उसे यह भी तो मालूम हो जाये कि हम लोग इतने बेवक़ूफ़ नहीं जितने सूरत से नज़र आते हैं।

प्रेम—मगर यह समझ लो कि फिर एक दोस्त गया अपने हाथ से।

रशीद—तौबा करो। मियाँ साँप को मारना है ख़ाली। क्या मैं इतना बेवक़ूफ़ हूँ कि लाठी भी तोड़ दूँ ?

अज़ीज़—ख़ैर कुछ भी हो किसी ख़तरे की वजह से कोई लतीफ़ा रोका नहीं जा सकता। आओ चलें।

प्रेम—तो क्या सब चलेंगे ?

रशीद—हाँ हाँ, हर्ज ही क्या है। आओ ना।

[सबके जाने की आवाज़, थोड़े अवकाश के बाद अयाज़ के दरवाज़े पर दस्तक]

अयाज़—कहाँ गईं, ज़रा देखना कोई हमारे यहाँ है ?

पत्नी—यह इस वक़्त कौन आया ? [आवाज़ बुलंद करके] ऐ कौन है ?

रशीद—अयाज़ साहब हैं, मैं डिप्टी साहब के यहाँ से आया हूँ।

उन्होंने भिजवाया है कि दो दिन से आख़िर···[अयाज़ दौड़कर बाहर निकलता है।]

अयाज़—कौन रशीद, ख़ैरियत तो है? और यह डिप्टी साहब का क्या क़िस्सा है?

रशीद—[जान-बूझकर ज़ोर-ज़ोर से बोलता है] भई, डिप्टी साहब सख्त परेशान हैं कि तुम दो दिन से कहाँ ग़ायब हो। आज भी इन्तेज़ार करते रहे, तमाम काम······।

अयाज़—[बात काटकर] यह क्या वाहियात है! आख़िर यह इस वक़्त सूझी क्या है? [अंदर से दरवाज़े पर दस्तक]

रशीद—देखो शायद अंदर कोई बुला रहा है। [अयाज़ अंदर जाता है।]

पत्नी—अब आख़िर उनको कहने क्यों नहीं देते हो। चोरियाँ तो इसी तरह खुला करती हैं और भाँडा तो यों ही फूटता है।

अयाज़—[घबराकर, हकलाते हुए] यानी तुम, तुम आख़िर तुम आ गईं ना इन बदमाशों के बहकाने में। यह सब मज़ाक़ कर रहे हैं।

पत्नी—और क्या बहकाने ही को तो वह बेचारे भी आधी रात को आये होंगे? मैं कहती हूँ कि अब तो आँखों में धूल मत झोंको।

[बाहर से आवाज़]

रशाद—अरे भई, कहाँ बैठ रहे?

अयाज़—आया भाई। [आहिस्ता से] मैं तुम्हें सब समझा दूँगा। तुम जाओ, जाकर लेटो। [बाहर निकलता है] वह भाई बात यह थी कि तुम्हारी भावज पूछ रही थीं कि आख़िर रशीद साहब को इस वक़्त क्या सूझी है। आधी रात को यह लगाई-बुझाई करने आये हैं।

रशीद—और सलाम भी कह दिया था भाभी को?

अयाज़—वह ख़ुद सलाम कह रही थीं। बल्कि उन्होंने तो क़हा था

कि मुझे तो रशीद साहब से बड़ा काम लेना है। भाई उनका मतलब यह है कि उनकी किताब का मुक़द्दमा तुम लिख दो।

रशीद—वह कभी नहीं कह सकतीं। उनको मालूम है कि मैं एक ग़ैरअदबी आदमी हूँ। दूसरे मुक़द्दमा लिखवाना होता तो अभी से खुशामद करतीं। पान तक को तो नेक बख़्त ने पूछा नहीं!

अयाज—ओहो, हाँ शायद पान ही बना रही हैं। अभी लाया। [अंदर जाता है।]

रशीद—[छुपके से] इधर आओ ज़रा, अंदर का तमाशा तो देखो।

अजीज—ऐसी रात में ऐसा सफ़ेद झूठ। वल्लाह कमाल है।

रशीद—देखो प्रेम, इस सूराख़ से झाँको। अजीज, बढ़ो ना आगे।

[सब अंदर झाँकते हैं।]

अयाज—खुदा के लिए आहिस्ता बोलो। अगर सुन लिया उसने तो मेरा घर से निकलना दुश्वार कर देगा।

पत्नी—तो मैं क्या करूँ, मुझसे इस वक़्त पान नहीं बनाये जायेंगे। तुम खुद बनालो। वाह, तुमने तो खूब तँबोलन मुक़र्रर किया है।

अयाज—अच्छा, अच्छा भाई मैं खुद बनाये लेता हूँ। मगर खुदा के लिए इस वक्त ज़रा चुप रहो। फिर रात भर जितना चाहे चीख़ लेना।

पत्नी—दफ़्तर से नहीं आये हैं ये तो आखिर इस वक़्त यहाँ क्यों मरने को आ गये। क्या दिमाग़ ख़राब है कुछ या कोई ख़ाना-बदोश है मुआ।

अयाज—तौबा है, खुदा के लिए ज़रा जबान को क़ाबू में रखो। तुम मुझको कहीं का न रखोगी। मैंने खुद ही पान भी इसीलिए बनाये हैं।

[बाहर निकलता है।]

रशीद—बेचारी को नाहक़ इस वक़्त तकलीफ़ दी। लो भाई जुगल, खाओ भाभी के हाथ के पान, लो अजीज।

अयाज—यानी पूरा लश्कर मौजूद है। गाई वह बहुत-बहुत सलाम कर रही हैं और कहती हैं कि रशीद साहब से आज भावज की लड़ाई ज़रूर हुई है नहीं तो इस वक़्त क्यों आते।

रशीद—ख़ैर, वह बेचारी जाहिल औरत क्या करती। अलबत्ता तुम अपनी ख़ैर मनाओ और भावज का बहुत-बहुत शुक्रिया अदा करना। अच्छा भाई चले अब।

अयाज—यार क्यों मुझे अज़ाब में मुब्तिला करके जा रहे हो? वह डिप्टी साहब वाली फुलझड़ी जो छोड़ी है उसके मुताल्लिक़ तो कुछ कहते जाओ।

जुगल—यानी तुम भी बीवी से इतना डरते हो कि ज़रा से मज़ाक में सटपटा गये?

अयाज—नहीं, ख़ैर मज़ाक़ तो वह ख़ुद समझ गई होंगी। मगर मैं कहता हूँ शक भी आख़िर क्यों रहे।

प्रेम -- भई, अब नहीं सुना जाता। ऊपर आस्मान है और इतने झूठ का बोझ तो ज़मीन भी नहीं उठा सकती।

अयाज—क्या मतलब आपका?

रशीद—भाई, ख़ुदा के लिए रहने दो। बख़्शो ग़रीब को। अभी आया है डिप्टी साहब के यहाँ से और रात भर बीवी से मेहर बख़्शवाना अलग है।

अयाज—तो यह कहिये आप लोग बड़ी देर से यहाँ खड़े थे। और हम लोगों का मज़ाक़ सुन रहे थे।

जुगल—बस भाई, यह हद हो गई। अगर यह मज़ाक़ था आप दोनों मियाँ-बीवी का तो ख़ुदा ही तुम्हारा हाफ़िज़ है।

प्रेम—इसकी बोटी-बोटी, काट डालो मगर झूठ से बाज़ थोड़ी आयगा।

जुगल—अच्छा भाई जाओ। अभी तुमको बहुत कुछ मजाक करना है।

रशीद—मगर ज़रा इन हज़रत के सर की पैमाइश लेते चलो। सुबह नापकर देखेंगे कि हम लोगों के जाने के बाद कितना मजाक और हुआ।

[सबका क़हक़हा]